

दैनिक जीवन में जनजातीय कला

दिलीप डामोर*

जनजातीय कला, भारतीय समाज की एक अमूल्य धरोहर है जो हमारे देश के विभिन्न आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है। यह कला विभिन्न आदिवासी समुदायों के जीवन, उनके विश्वास, रीति-रिवाज और परंपराओं को व्यक्त करती है। जनजातीय कला भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से ही विकसित हुई है, और इसे अपने रचनात्मक, विविध और विशिष्ट रूपों के लिए पहचाना जाता है। जनजातीय कला न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक रूप है, बल्कि यह आदिवासी लोगों की सामाजिक संरचना, प्रकृति के प्रति उनका दृष्टिकोण और उनकी रोज़मरा की ज़िन्दगी के महत्वपूर्ण पहलुओं का भी प्रतिनिधित्व करती है।

आज के आधुनिक और तकनीकी समाज में जहां हम लोग उच्चतम तकनीक का उपयोग करके कला का निर्माण करते हैं, वहीं जनजातीय कला का हर रूप अपने आप में एक प्राकृतिक रूप से विकसित विधा है जो बहुत गहरी सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ी हुई है। जनजातीय कला का प्रयोग न केवल आदिवासी क्षेत्रों में बल्कि आधुनिक शहरों और शहरी जीवन में भी हो रहा है। यह कला अब भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर भी पहचानी जाती है और कई अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर इसे सम्मान प्राप्त हो रहा है।

जनजातीय कला के विभिन्न रूप

जनजातीय कला के कई रूप हैं, जो विभिन्न जनजातियों की सांस्कृतिक विशेषताओं और जीवनशैली को दर्शाते हैं। इनमें प्रमुख रूप से चित्रकला, शिल्पकला, वस्त्र कला, काष्ठकला, मूर्तिकला, और रेजिन कला शामिल हैं।

1. चित्रकला (Painting)

जनजातीय चित्रकला भारतीय जनजातियों की एक महत्वपूर्ण कला है। ये चित्रकला मुख्य रूप से दीवारों पर, कपड़ों पर या कागज पर बनाई जाती हैं। इनमें प्रकृति, जीव-जंतु, और रोज़मरा की ज़िन्दगी के दृश्य होते हैं। उदाहरण के लिए, मधुबनी कला और वारली कला बहुत प्रसिद्ध हैं। इन चित्रों में आदिवासी लोग अपनी संस्कृति, देवी-देवताओं, जीव-जंतुओं, और प्राकृतिक घटनाओं को चित्रित करते हैं। वारली कला विशेष रूप से महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में प्रचलित है, जबकि मधुबनी कला बिहार के मिथिला क्षेत्र से संबंधित है। इन कलाओं में पारंपरिक प्रतीकों और पैटर्न्स का उपयोग होता है जो जीवन की सरलता और प्रकृति के प्रति आदिवासी समुदाय की श्रद्धा को प्रदर्शित करते हैं।

2. शिल्पकला (Craftwork)

शिल्पकला भी जनजातीय कला का एक अहम हिस्सा है। इसमें विभिन्न सामग्रियों जैसे मिट्टी, बांस, लकड़ी, और धातु से वस्तुएं बनाई जाती हैं। आदिवासी समुदाय इन सामग्रियों का उपयोग करके घरों के उपयोगी सामान, सजावटी वस्तुएं और अन्य विभिन्न आइटम्स बनाते हैं। जैसे,

बांस से बने बर्तन, लकड़ी से बनी मूर्तियां, और मिट्टी के बर्तन आदिवासी जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। शिल्पकला के माध्यम से जनजातीय समुदाय अपनी पारंपरिक जीवनशैली और संस्कृति को बनाए रखते हैं।

3. वस्त्र कला (Textile Art)

आदिवासी समाज के वस्त्र कला में भी अनूठे और विशिष्ट तत्व पाए जाते हैं। आदिवासी लोग अक्सर प्राकृतिक रंगों और वस्त्रों का उपयोग करते हैं। उनका पहनावा मुख्य रूप से पारंपरिक और प्राकृतिक होता है, और इसे बनाने में हाथ से बुने गए कपड़े और रंगों का इस्तेमाल होता है। इन कपड़ों में अक्सर प्राकृतिक दृश्य, जैसे जानवरों और पेड़ों के चित्र होते हैं, जो इन जनजातियों के जीवन और प्रकृति से गहरे संबंध को दर्शाते हैं। उदाहरण के तौर पर, संताली और गोंड जनजातियों की वस्त्र कला बहुत प्रसिद्ध है।

4. काष्ठकला (Woodwork)

काष्ठकला, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के बीच, एक प्राचीन कला है। इसमें लकड़ी के विभिन्न रूपों और आकारों से सजावटी और उपयोगी वस्तुएं बनाई जाती हैं। आदिवासी काष्ठकला में मूर्तियाँ, बर्तन, और अन्य दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली वस्तुएं बनाई जाती हैं। इस कला में विविधता होती है, और यह हर जनजाति की विशिष्ट शैली को दिखाती है।

5. मूर्तिकला (Sculpture)

आदिवासी मूर्तिकला भारत में जनजातीय कला का एक प्रमुख हिस्सा है। आदिवासी मूर्तिकार मुख्य रूप से लकड़ी, मिट्टी और पत्थर का उपयोग करते हैं। ये मूर्तियाँ अक्सर देवता और देवी-देवताओं की होती हैं। विभिन्न जनजातियों में इन्हें पूजा, अनुष्ठान और सामाजिक अनुष्ठानों में विशेष स्थान दिया जाता है। उदाहरण के रूप में, ओडिशा के कंधमाल क्षेत्र की आदिवासी मूर्तिकला प्रसिद्ध है, जो प्राकृतिक रूप से आकर्षक और कलात्मक होती है।

6. रेजिन कला (Resin Art)

रेजिन कला, जो कुछ हद तक नई है, आधुनिक समय में आदिवासी कला का एक नया रूप है। इसमें रेजिन का उपयोग करके रंगीन और सजीव चित्र बनाए जाते हैं, जो आदिवासी कला के पारंपरिक रूपों को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं। इस कला में अक्सर प्राकृतिक विषयों को चित्रित किया जाता है, जैसे वन्य जीवन, जलप्रपात, और सांस्कृतिक प्रतीक।

दैनिक जीवन में जनजातीय कला का प्रभाव

आज के समय में, जनजातीय कला का प्रभाव दैनिक जीवन में विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है।

1. सजावट और घरों में उपयोग

जनजातीय कला का प्रभाव घरों की सजावट में देखा जा सकता है। वारली पैटिंग्स, मधुबनी डिज़ाइन, और आदिवासी शिल्पकला अब घरों की दीवारों पर, फर्नीचर और अन्य सजावटी वस्तुओं पर दिखने लगे हैं। ये कला रूप न केवल घरों की सुंदरता बढ़ाते हैं, बल्कि उनके माध्यम से लोग आदिवासी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ाव महसूस करते हैं।

2. फैशन और वस्त्र उद्योग में योगदान

आदिवासी कला का प्रभाव फैशन इंडस्ट्री में भी देखा जा सकता है। शहरी इलाकों में आजकल आदिवासी वस्त्र कला को फैशन डिजाइनरों द्वारा अपनी कलेक्शन में शामिल किया जाता है। आदिवासी डिजाइन, रंग और पैटर्न अब आधुनिक फैशन के हिस्से बन चुके हैं। इसके अलावा, आदिवासी वस्त्रों का उपयोग बूट, बैग और अन्य फैशन आइटम्स बनाने में भी किया जाता है।

3. शहरी जीवन में सांस्कृतिक प्रभाव

शहरी जीवन में जनजातीय कला का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। विशेष रूप से कला गैलरी, संग्रहालय और कला प्रदर्शनियों में आदिवासी कला की प्रदर्शनी लगाई जाती है, जिससे लोगों को इस अद्भुत कला रूप के बारे में जानकारी मिलती है। इसके अलावा, स्कूलों और विश्वविद्यालयों में जनजातीय कला पर शोध और कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।

जनजातीय कला भारतीय संस्कृति की एक अनमोल धरोहर है, जो न केवल कला के क्षेत्र में बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं में गहरी छाप छोड़ती है। यह कला आज भी आदिवासी जीवन, उनकी परंपराओं और विश्वासों का सजीव चित्रण करती है। आधुनिक समाज में, जहाँ तकनीकी बदलाव और परिचमी प्रभाव बढ़ रहे हैं, जनजातीय कला का अस्तित्व और प्रसार हमारी सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी सुंदरता, सादगी और अर्थपूर्णता ने इसे न केवल आदिवासी क्षेत्रों तक सीमित रखा है, बल्कि यह अब हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुकी है।